

DR. KRISHNA BIHARI MISHRA

Dr. Krishna Bihari Mishra is the retired Reader and Head, Department of Hindi, Bangabasi Morning College, Kolkata. Dr. Mishra is a renowned litterateur of national fame. He has made remarkable contribution to Indian journalism with regard to its historiography and its contribution to national integrity, national thought and quintessential Indian culture.

2. Born on July 1, 1936 Dr. Mishra received his primary education from village school and secondary education from Gorakhpur. He then moved to Banaras Hindu University for pursuing graduation and post graduation. He completed his doctoral degree from Calcutta University in 1965. His dissertation Hindi patrakarita: jatiya chetna aur khari boli sahitya ki nirman bhoomi was later published by Bharatiya Jnanpith and is currently in its 11th edition. As a keen observer, Dr. Mishra started creative writing since his graduation in leading magazines like Kalpana and Kahani. Under the able guidance of stalwarts like Nand Dulare Vajpayee, Hazari Prasad Dwivedi, Vishwanath Prasad Mishra, and Chandrabali Pandey, Dr. Mishra shaped himself into a creative thinker and an essayist.

3. Dr. Mishra is highly appreciated for essays and memoirs that are his self-reflection and mirrors the everyday life he has had come across His works have aroused a feeling of belongingness, cohesiveness, optimism and being rooted which metaphorically enlivens a rural socialscape in place of urban landscape in contemporary times. His more than five decades of writing and deliberation is an amalgamation of multiple shades of thinking, which he has brought at a singular point of glorified past and lightful future of Bharatiya Sanskar aur chetna (Indian Culture and Consciousness).

4. Dr. Mishra's contribution to Indian journalism is regarded as a classic and a milestone by both Indian and foreign critic. With seven books on different facets and multiple contexts of Journalism, he is one of the highly referred authors in this field. Far from being technical guidebooks, his creations foreground the history and situatedness of journalism, as he believes that only history enables us to think the present critically and alternatively. His ability to think in dyadic terms has drawn appreciation and accolades. In a supplement to his critical and historical pieces of journalism, he touches upon and internalizes the spiritual nuances of Shri Ramakrishna Pramhansa', Adi Shankaracharya, Binoba Bhave, Swami Vivekanand and Aurobindo Ghosh. His book kalpataru ki utsav leela (on Ramakrishna Pramhansa) is widely read by all strata of the society and highly appreciated for its unique narrative style. His books, that include works on journalism, reflective and critical texts, memoirs, biographies, edited collections, and translated creations, are 27 at present.

5. Dr. Mishra is the recipient of numerous awards and honors. He has been conferred honorary D.Litt. from Makhanlal Chaturvedi Rashtriya Patrakarita Avam Sanchar Vishwayidyalaya. He received Bharatiya Gnanpith's Moortidevi Puraskar, Mahatma Gandhi Puraskar and Sahitya Bhushan from Uttar Pradesh Hindi Sansthan, Acharya Vidyaniwas Mishra Samman and Dr. Hedgewar Pragya Samman. Indira Gandhi National Centre for the Arts honoured him as the part of their Sanskriti Samvad Shrinkhala-7.



डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र

डॉ. श्री कृष्ण बिहारी मिश्र हिन्दी विभाग, बंगाबासी प्रात:कालीन महाविद्यालय, कोलकाता के सेवानिवृत्त रीडर और प्रमुख हैं। आप राष्ट्र प्रसिद्ध विख्यात साहित्यकार हैं। आपने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास-लेखन और राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय विचार धारा और सर्वोत्कृष्ट भारतीय संस्कृति के बारे में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

2. आपका जन्म 1 जुलाई, 1936 को हुआ और आपने प्राथमिक शिक्षा गांव के विद्यालय से एवं माध्यमिक शिक्षा गोरखपुर से प्राप्त की। बाद में स्नातक और स्तानतकोत्तर शिक्षा के लिए आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय चले गए। वर्ष 1965 में आपने कोलकाता विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आपका शोध प्रबंध हिन्दी पत्रकारिता: जातिय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण भूमि, बाद में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित की गई थी और वर्तमान में इसका 11वां संस्करण चल रहा है। उत्सुक पर्यवेक्षी के रूप में आपने स्नातक स्तर पर ही अग्रणी पत्रिकाओं जैसे कल्पना और कहानी के लिए रचनात्मक लेख लिखना आरंभ कर दिया था। नन्द दुलारे वाजपई, हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्रा और चन्द्रबली पाण्डेय जैसे निर्भीक लेखकों के कुशल मार्गदर्शन में आपने स्वयं को रचनात्मक विचारक और निबन्धकार के रूप में ढाल लिया।

3. निबधों और संस्मरणों हेतु आपकी भूरी-भूरी प्रशंसा की जाती है जो आपके स्वयं की झलक प्रदान करते हैं और आपके द्वारा बिताए गए प्रतिदिन के जीवनक्रम को दिखाते हैं। आपके कार्यों ने अपनेपन, साहचर्य, आशावाद के भाव जगाएं हैं और गहरे होने के कारण ये समसामयिक समय में शहरी दृश्य के स्थान पर ग्रामीण-सामाजिक दृश्य को लाक्षणिक रूप से जीवंत कर देते हैं। आपका पांच दशक से अधिक का लेखन और विमर्श कार्य उस बहुमुखी विचारधारा का मिश्रण है जिसे आप खूबसूरत भूतकाल और भारतीय संस्कार और चेतना के भावी प्रकाश के एकल बिंदु पर ले आए हैं।

4. भारतीय पत्रकारिता में आपके योगदान को भारतीय और विदेशी दोनों समालोचकों द्वारा उत्कृष्ट और मील का पत्थर माना जाता है। विभिन्न पहलूओं पर सात पुस्तकों और पत्रकारिता के बहुसंदर्भो वाले आप ऐसे लेखकों में से एक हैं जिनका इस क्षेत्र में सबसे अधिक संदर्भ दिया जाता है। तकनीकी मार्गदर्शी पुस्तकों से इतर आपकी रचनाएं पत्रकारिता के इतिहास और स्थिति का केन्द्र स्थान हैं, चूंकि आपका विश्वास है कि केवल इतिहास ही हमें वर्तमान को समीक्षात्मक और वैकल्पिक ढंग से समझने की शक्ति देता है। अलग-अलग संदर्भों से समझने की आपकी योगयता की प्रशंसा की जाती है और इसे सराहा जाता है। पत्रकारिता के समीक्षात्मक और ऐतिहासिक रचनाओं के अनुपूरक के रूप में आप श्री रामकृष्ण परमहंस, आदि शंकराचार्य, विनोबाभावे, स्वामी विवेकानन्द और अरविन्दो घोष के आध्यात्मिक सूक्ष्म भेदों पर भी प्रकाश डालते हैं और उन्हें अपनी रचनाओं में शामिल करते हैं। आपकी पुस्तक कलपतरू की उत्सव लीला (रामकृष्ण परमहंस के बारे में) को समाज के सभी वर्गों द्वारा बड़े पैमाने पर पढ़ा जाता है तथा विशिष्ट कथानक पद्धति के कारण इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की जाती है। वर्तमान में आपकी 27 पुस्तकें हैं जिनमें पत्रकारिता, विमर्शक और समीक्षात्मक पाठ, संस्मरण, जीवनी, सम्पादित संग्रह और अनूदित रचनाओं से संबंधित कार्य सम्मिलित हैं।

5. आपको बहुत से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय से आपको मानद डी. लिट की उपाधि प्राप्त है। आपको भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से महात्मा गांधी पुरस्कार और साहित्य भूषण, आचार्य विद्यानिवास मिश्रा सम्मान और डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान मिल चुका है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने उनकी संस्कृति सम्वाद श्रंखला-7 के भाग के रूप में आपको सम्मानित किया है।